ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class IX

Subject- Hindi Second Language

Topic-

अनुस्वार एवं अनुनासिक

By- आचार्य सुशील शर्मा

©ISWK

अनुस्वार

अनुस्वार का शाब्दिक अर्थ है - अनु+स्वार अर्थात स्वर के बाद आने वाला। दूसरे शब्दों में - 'अनुस्वार' स्वर के बाद आने वाला व्यंजन है। इसकी ध्वनि नाक से निकलती है। हिंदी भाषा में अनुस्वार का चिह्न बिंदु (ं) है । इसी रूप में अनेक स्थानों पर इसका प्रयोग किया जाता है।

जैसे :- चंचल, संभव, अंबर, सुंदर, मंगल, बंदर, पंकज |

हिंदी वर्णमाला के पाँच-वर्गों को अवश्य जानिए -

1- 'क' वर्ग यानी क, ख, ग, घ, ङ
2- 'च' वर्ग यानी च, छ, ज, झ, ञ
3- 'ट' वर्ग यानी ट, ठ, ड, ढ, ण
4- 'त' वर्ग यानी त, थ, द, ध, न
5- 'प' वर्ग यानी प, फ, ब, भ, म

नियम- अनुस्वार पंचम वर्णों के स्थान पर लगाएँ |

अनुस्वार (ं) का प्रयोग पंचम वर्ण (ङ्, ञ्, ण्, न्, म् - ये पंचमाक्षर कहलाते हैं) के स्थान पर किया जाता है। जैसे -

गङ्गा - गंगा / चञ्चल - चंचल / झण्डा - झंडा / गन्दा - गंदा / कम्पन - कंपन

नियम के अपवाद -

1 . यदि किसी वर्ग के पंचम अक्षर के बाद किसी भी वर्ग का पंचम अक्षर आए तो अनुस्वार न लगाएँ ।

जैसे- वाड्.मय, अन्य, चिन्मय, उन्मुख आदि शब्द वांमय, अंय, चिंमय, उंमुख के रूप में नहीं लिखे जाते हैं।

2. किसी शब्द में यदि पंचम वर्ण दो बार आए तो पहले वाले पंचम वर्ण के बदले अनुस्वार न लगाएँ |

जैसे- प्रसन्न, अन्न, सम्मेलन आदि प्रसंन, अंन, संमेलन के रूप नहीं लिखे जाते हैं।

3. कुछ शब्दों में अनुस्वार के बाद य, र, ल, व, ह आए तो वहाँ अनुस्वार न लगाएँ।

जैसे - पुण्य,अन्य,समन्वय,मान्यता, कन्हैया, तुम्हें आदि शब्द इसी तरह सही है।

स्मरणीय - य,र,ल,व्,श,स,ह के पहले अनुस्वार अपने मूल (अं) रूप में यहाँ लगाएँ -

जैसे - संयम,संयत,संयोग

जैसे- संयम शब्द का वर्ण विच्छेद

(संयम = स्+अं+य्+अ+म्+अ) होगा ।

संरचना, संरक्षण, संरक्षक संलग्न, संलाप, संलेपन

संवाद, संवहन, संवेदना संशय, संशोधन,

संसार, संस्कृत, संस्कार संहार,

नोट - पाठों में आए हुए अनुस्वार वाले शब्दों के अभ्यास करें -

अनुनासिक

अनुनासिक' शब्द 'अनु+नासिक' के योग से बना है। 'अनु' उपसर्ग है जिसका अर्थ है- अनुगमन करना और 'नासिक' का अर्थ है - नाक। जब वायु मुख के साथ-साथ नासिका - मार्ग से बाहर निकलती है, तब उच्चारित होने वाले सभी स्वर 'अनुनासिक' कहलाते हैं। 'अनुनासिक' का चिह्न है चंद्रबिंदु (ँ)।

जैसे- चाँद , हँसना , गाँव , आँख , ऊँट , पाँच ,बाँसुरी आदि।

नियम- जिन स्वरों का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से किया जाता है, उन्हीं स्वरों को लिखते समय वर्ण के ऊपर अनुनासिक के चिह्न (ँ) प्रयोग किए जाते हैं।

यह ध्वनि (अनुनासिक) वास्तव में स्वरों का गुण होती है। अ, आ, उ, तथा ऊ स्वर वाले शब्दों में इसे लगाया जाता है।

जैसे - अँधेरे, साँस, बाँधना, कुआँ, मुँह, धुँधला, फूँकना, सकूँगा, आदि।

सरल रूप में समझने के लिए बता दूँ कि जिस वर्ण के ऊपर कोई मात्रा न हो वहीं अनुनासिक चिह्न लगाएँ|(दिए गए शब्दों को ध्यान से देखें और समझें)

यहाँ आपके मन में संदेह हो सकता है कि स्वरों में तो इ, ई, ए, ऐ, ओ और औ भी आते हैं तो अनुनासिक इन स्वरों वाले शब्दों में क्यों नहीं लगा सकते ?

इसका कारण यह है कि जिन स्वरों में शिरोरेखा (शब्द के ऊपर खींची जाने वाली लाइन) के ऊपर मात्रा के चिह्न आते हैं, वहाँ अनुनासिक के लिए जगह की कमी के कारण अनुस्वार चिह्न (बिंदु) ही लगाए जाते हैं।

इस नियम को उदाहरणों के माध्यम से समझेंगे -

नहीँ - नहीं / मैँ - मैं / गोँद - गोंद

इन सभी शब्दों में जैसा कि हम देख रहे हैं कि शिरोरेखा से ऊपर मात्रा-चिह्न लगे हुए हैं - जैसे 'नहीं' में ई, 'मैं' में ऐ तथा 'गोंद' में ओ की मात्रा के चिह्न हैं।

नोट- 'ए' जब स्वर के रूप में लिखा जाता है तब बहुवचन में 'ए' के ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) ही लगाए जाते हैं| जैसे- जाएँगे, खाएँगे आदि |

अनुस्वार और अनुनासिक संबंधी सामान्य अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
हंसमुख	हँसमुख	यहां	यहाँ
संवारना	सँवारना	अंधेरा	अँधेरा
आंख	आँख	साँसारिक	सांसारिक
सन्यासी	संन्यासी	ऊंट	ऊँट
गूंगा	गूँगा	कांच	काँच
वहां	वहाँ	दूंगा	दूँगा
चांद	चाँद	गंवार	गँवार

पंचमाक्षर संबंधी सामान्य अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
दन्ड	दंड	भन्डार	भंडार
सम्वत्	संवत्	सम्वाद	संवाद
कन्गन	कंगन	पन्डित	पंडित

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अन्ग	अंग	हिन्सा	हिंसा
सून्ड	सूँड	सन्सार	संसार
सन्कट	संकट	पन्खा	पंखा
पन्क	पंक	दन्डित	दंडित
सन्शय	संशय	मयन्क	मंयक
झन्झट	झंझट	कन्व	कण्व

धन्यवाद

स्वस्थ रहें! सुरक्षित रहें!

घर में रहें !!!